श्री स्वामिनाथ पंचकं

श्री स्वामिनाथ पंचकं

हे स्वामिनाथार्तबंधो |
भस्मलिप्तांग गांगेय कारुण्यसिंधो | |

रुद्राक्षधारिन्नमस्ते
रौद्ररोगं हर त्वं पुरारेर्गुरोर्मे |
राकेंदुवक्त्रं भवंतं
माररूपं कुमारं भजे कामपूरं | | 1 | |

मां पाहि रोगादघोरात्
मंगळापांगपातेन भंगात्स्वराणां |
कालाच्च दुष्पाककूलात्
कालकालस्यसूनुं भजे क्रांतसानुं | | 2 | |

ब्रह्मादयो यस्य शिष्याः
ब्रह्मपुत्रा गिरौ यस्य सोपानभूताः |
सैन्यं सुराश्चापि सर्वे
सामवेदादिगेयं भजे कार्तिकेयं | | 3 | |

काषाय संवीत गात्रं
कामरोगादि संहारि भिक्षान्न पात्रं |
कारुण्य संपूर्ण नेत्रं
शक्तिहस्तं पवित्रं भजे शंभुपुत्रं | | 4 | |

श्रीस्वामि शैले वसंतं
साधुसंघस्य रोगान् सदा संहरंतं |
ओंकारतत्त्वं वदंतं
शंभुकर्णे हसंतं भजेऽहं शिशुं तं | | 5 | |

स्तोत्रं कृतं चित्रचित्रं
दीक्षितानंतरामेण सर्वार्थसिद्धये |
भक्त्या पठेद्यः प्रभाते
देवदेवप्रसादात् लभेताष्टसिद्धिं || 6 ||

इति श्रीअनंतरामदीक्षितर् कृतं श्री स्वामिनाथ पंचकं |